

आधुनिक समाज में श्रीमद्भागवत की उपयोगिता

Ghanshyam Das

Research Scholar, Dept. Vaidic Darshan, SVDV
Banaras Hindu University, Varanasi, Uttar Pradesh, India
Email: gdasbhu@gmail.com

Abstract: सृष्टि के आरम्भ से लेकर आज तक मानव जीवन के इतिहास में हमारे आध्यात्मिक ग्रन्थों ने मनुष्य के जीवन दर्शन, व्यवहार, विचार, संस्कृति को सदैव प्रभावित किया है। हमारी भारतीय ज्ञान परम्परा में वेद, पुराण, साहित्य आदि का अमूल्य योगदान रहा है, क्योंकि यह सब धार्मिक ग्रन्थ धर्म के अतिरिक्त सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक शिक्षाओं का मुख्य स्रोत हैं। इन ग्रन्थों में श्रीमद्भागवत महापुराण धार्मिक और व्यावहारिक शिक्षा के लिए सर्वोच्च धार्मिक ग्रन्थ है। यह केवल धर्म ग्रन्थ ही नहीं बल्कि जीवन व्यवहार, नैतिक मूल्य, मानसिक स्वास्थ्य, नेतृत्व, सम्बन्ध, समाज और अंतिम सत्य को बताने वाला अद्भुत एवं अद्वितीय ग्रन्थ है। मानव जीवन में विकास के साथ-साथ जीवन की गति भी तीव्र हो गई है, आधुनिक तकनीक, आर्थिक प्रतिस्पर्धा, भौतिक सुख की इच्छाओं ने मानव जीवन के अन्दर अत्यधिक तनाव, असुरक्षा, एकाकीपन और अनेकानेक मानसिक द्वन्द्वों को भर दिया है जिसमें तनाव, अवसाद, सम्बन्धों में दूरी, आत्महीनता, नैतिक एवं चारित्रिक पतन, जीवन में बढ़ती आवश्यकताओं एवं मानसिक असंतुष्टि आधुनिक समाज की सबसे जटिल एवं अनन्तर्हीन समस्याओं के रूप में दिखाई देती है आज के समय में जब प्रत्येक मनुष्य के जीवन का प्रत्येक क्षण लगभग असन्तुलित होता हुआ दिखाई देता है तब जीवन के इस अन्येरों में श्रीमद्भागवत महापुराण में भक्तों की प्रेरणास्पद कथाएं भागवत का उपदेश एक पूर्ण प्रकाशित सूर्य के समान दिखाई देता है आधुनिकता से ओतप्रोत मानव जीवन चाहे जितना भी परिवर्तित हो जाए किन्तु मानव के अन्तर्मन में आत्मिक शान्ति और सत्य की खोज आज भी उतनी ही जारी है इस स्थिति में श्रीमद्भागवत महापुराण मनुष्य जीवन के अनेक दोषों के निवारणार्थ एक दिव्यौषधि के समान है यह दिव्यौषधि जो भौतिक और मानसिक सभी प्रकार से इस जीवन को सन्तुलित करती है। यह ग्रन्थ केवल धार्मिक ग्रन्थ ही नहीं बल्कि जीवन दर्शन और जीवन जीने की कला को मनुष्य के अन्दर प्रकाशित करता रहा है।

Keywords: श्रीमद्भागवत महापुराण, आधुनिक समाज, मानसिक स्वास्थ्य एवं शान्ति, नैतिक मूल्य, जीवन दर्शन एवं कर्मयोग।

श्रीमद्भागवत महापुराण का परिचय एवं स्वरूप

भागवत पुराण 18 पुराणों में सर्वोत्तम एवं भक्ति प्रधान ग्रन्थ है यह 12 स्कन्ध, 335 अध्याय, 18 हजार श्लोकों में वर्णित भक्ति एवं भगवल्लीलाओं से ओतप्रोत ग्रन्थ है क्योंकि श्रीमद्भागवत-महापुराण भक्ति ज्ञान वैराग्य रूपी आनन्दामृत के प्रवाह से परिपूर्ण पवित्र त्रिवेणी है जिसे शैव-शाक्त व वैष्णवादि आचार्य अपनी परम आस्था से रसास्वादन करते एवं कराते हैं, तत्वतः श्रीमद्भागवत महापुराण अष्टाक्षर एवं द्वय मन्त्र का भाष्य है, इसमें धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष, जीव, ईश्वर, अधिकारी आदि प्रतिपाद्य विषय के रूप में वर्णित हैं, यह ग्रन्थ जीवन प्रबंधन, आध्यात्मिक मनोविज्ञान, मानवीय मूल्यों, भक्तियोग, कर्मयोग, और ज्ञानयोग को अपनी मधुर एवं उत्कृष्ट कथाओं के माध्यम से समझाने वाला महान दार्शनिक ग्रन्थ है श्रीमद्भागवत ईश्वर भक्ति, कर्म के प्रति सजगता, ज्ञानोन्मुख और जीवन को नैतिक पवित्रता की ओर ले जाने वाला है यह ग्रन्थ साक्षात् गोविंद स्वरूप है—

“तेनेयं वाड्मयी मूर्तिः प्रत्यक्षा वर्तते हरे:।
सेवनाच्छ्रवणात्पाठाद्वर्षनात्पापनाशिनी॥ ६२॥”¹

भक्ति ज्ञान वैराग्य से परिपूर्ण इस भागवत रूपी सुधा सिन्धु का अवगाहन करके मनुष्य मुक्ति प्राप्त कर लेता है भागवत का उद्देश्य केवल मोक्ष का मार्ग बताना ही नहीं बल्कि जीवन को मधुर सहनशील और सौम्य बनाना भी है यह ग्रन्थ जीवन के प्रत्येक पहलू नैतिकता, कर्तव्य, प्रेम, नेतृत्व, त्याग, समाज, धर्म, मनोविज्ञान, मृत्यु, दर्शन आदि को परिभाषित करता है।

आजकल संसार का लगभग प्रत्येक व्यक्ति चिन्ता, अवसाद और मानसिक तनाव से ग्रस्त है, आज के रिश्तों में आपसी प्रेम और सम्बाद की न्यूनता है, एक दूसरे पर अपेक्षाओं का भार है, ईर्ष्या, स्वार्थ आदि अनेक समस्याएं धेरे हुए हैं। भागवत में वर्णित सुदामा और उद्धव सम्बाद अपेक्षा अभिमान रहित होकर के सब के प्रति प्रेम, सद्ग्राव, त्याग और मानसिक शान्ति प्रदान करता है। गोपी कृष्ण सम्बन्ध मानव जीवन में अपने भौतिक सम्बन्धों को निर्मल, निष्कपट, निस्वार्थ और सर्मित प्रेम का सर्वोत्तम उदाहरण है। आधुनिक मानव को सीखना चाहिए की प्रेम अतिकरण नहीं समर्पण का नाम है, आपसी सम्बन्ध भौतिक अपेक्षाओं से नहीं आपसी प्रेम और एक दूसरे की स्वीकार्यता से चलते हैं। रिश्तों में स्थायित्व त्याग, धैर्य, समर्पण और विश्वास से होता है। क्रोध, लोभ, मोह आदि विषय जीव को पथब्रह्म कर देते हैं, आज का युवावर्ग अव्यवस्थित दिनचर्या के कारण शारीरिक स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन दोनों खो बैठा है। नशा, मोबाइल की आदत आदि के कारण आजकल के बच्चे अपने गुरु दादा-दादी माता-पिता के पास कभी बैठते ही नहीं जिससे बच्चों में संस्कार व्यवहारिकता एवं अनुभवजन्य ज्ञान की अत्यधिक कमी दिखाई देती है।

नैतिक मूल्यों का पुनर्जीवन

आज के आधुनिक समाज का नैतिक पतन प्रतिस्पर्धात्मक रूप से हो रहा है, लोग सफलता और प्रतिष्ठा को नैतिकता के बजाय चतुराई से प्राप्त होते हैं ऐसा मानने लगे हैं जबकि भागवत में सत्य, अहिंसा, दया, धर्म, क्षमता, सन्तोष, करुणा, परहित तथा अम्बरीश, प्रह्लाद, विदुर, पाण्डव, ध्रुव, सुदामा आदि जैसे अनेक उच्च चरित्र वाले नैतिक आदर्श प्रतिपादित हैं, उपरोक्त मूल्यों की अत्यधिक आवश्यकता आज के गृहस्थ जीवन में, व्यापार में, नौकरी में, प्रशासनिक व्यवस्था में, न्यायिक व्यवस्था में और समाज के प्रत्येक स्तर पर अत्यधिक है। इस आधुनिक युग में भौतिक सफलताओं और अनेक सांसारिक सुख सुविधाओं को प्राप्त करना ही श्रेष्ठता का मापदण्ड मान लिया गया जबकि हमारे आचार्यों ने कहा है कि—

“धनवृद्धा बल वृद्धा आयुवृद्धास्तथैव च।

ते सर्वेऽपि ज्ञान वृद्धाश्च किंकिरा शिष्य किंकिरा॥।”

कोई बल में बड़ा होता है, कोई आयु में बड़ा होता है कोई कदाचित् धन में भी बड़ा होता है, जो ज्ञान में बड़े होते हैं वो तो सबसे बड़े होते हैं।

भगवान श्री रामकृष्ण युधिष्ठिर आदि हमारे जीवन के आदर्श हैं। भगवान श्री कृष्ण के समान प्रेम, कूटनीति और रणनीति का सर्वोच्च उदाहरण कौन हो सकता है, न्याय और सत्य के लिए युधिष्ठिर जैसा उदाहरण कहीं भी देखने को नहीं मिलता, परम भागवत अम्बरीष संयम, भगवत समर्पण और कठोर कर्तव्य निष्ठा, क्षमाशीलता आदि के रूप में उत्तम उदाहरण हैं, दृढ़ संकल्प के लिए आप ध्रुव चरित्र को आत्मसात करिए जिन्होंने 5 वर्ष की आयु में भगवान को प्राप्त कर लिया। भगवत के एक अद्भुत पात्र हैं श्री विदुर जी महाराज निष्काम और नीति परायणता की जो परिभाषा है।

आज का आधुनिक समाज भ्रष्टाचार, हिंसा, असन्तोष, अविश्वास, लोभ, पारिवारिक विघटन आदि,

चुनौतियों से लड़ रहा है जिसका प्रमुख कारण नैतिक मूल्यों का क्षय है। श्रीमद्भागवत महापुराण कलिकाल के कलुषों से कवलित मनुष्यों में धर्म ज्ञान वैराग्य और भक्ति रूपी दिव्यौषधि के द्वारा धर्म दया सत्य अहिंसा धैर्य संयम क्षमता और सेवा रूपी रोग प्रतिरोधक क्षमता को विकसित करती है— ‘सत्यं परं धीमहि भागवत’² ॥ 1.1.1॥

हम उस सत्य को प्रणाम करते हैं जो सापेक्ष सत्यों के विपरीत एक ऐसा सत्य है जिसकी सत्ता को कोई नकार नहीं सकता उस सत्य के प्रति जीव का यह प्रणाम उसकी बुद्धि और आत्मा को उसे दिव्य सत्य के प्रति समर्पित करने के लिए प्रेरित करता है—

“दयया सर्वभूतेषु सन्तुष्ट्या येन केन वा।
सर्वन्दिन्द्रियोपशान्त्या च तुष्यात्श्य जनार्दनः॥”

प्रत्येक जीवमात्र के प्रति दयाभाव, भगवत् इच्छा से जो कुछ भी प्राप्त हो जाए उसी में सन्तुष्ट हो जाना, सभी विषयों से अपनी सभी इन्द्रियों का संयमन इन तीन साधनाओं से परमात्मा शीघ्र ही प्रसन्न होते हैं। इनका अनुकरण करने वाले पर भगवान् कृपा करते हैं। इसलिए सभी इन्द्रियों को संयमित करना चाहिए संयम के बिना जीवन सरल नहीं हो सकता। मनुष्य विषयान करने से मरता है किन्तु उपभोग न करते हुए भी विषयों के चिन्तन मात्र से भी मनुष्य मरता है, अर्थात् विषय विष से भी भयंकर कष्टकारक हैं। अतः विषवत् विषयों का त्याग करना है।

“त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत्त्वयं त्यजेत्॥”³

“काम, क्रोध और लोभ — ये तीन प्रकार के नरक के द्वार जीवात्मा का पतन करने वाले हैं। अतः मनुष्य को शान्ति पूर्वक जीवन जीने के लिए इन तीनों का त्याग कर देना चाहिए।”

ऐसे ही अनेक उपदेश और कथाओं के द्वारा हम श्रीमद्भागवत महापुराण से बहुत कुछ सीख सकते हैं नैतिकता के प्रमुख चरित्र प्रह्लाद, परीक्षित, सुदामा, ध्रुव आदि को आज के आधुनिक मानव को जरूर पढ़ना चाहिए।

कर्म निष्ठा और अनासक्ति

हमारे कर्म अवश्यम्भावी हैं मनुष्य कर्म के बिना नहीं रह सकता प्रत्येक जीव अच्छा या बुरा कुछ ना कुछ कर्म कर रहा होता है सोचना, बोलना, तर्क करना, सेवा, भजन, पूजन, नौकरी आदि सब कुछ कर्म ही है और कर्म का फल अवश्य मिलता है। एक विद्यार्थी सम्पूर्ण वर्ष अध्ययन करता है और “कहीं परीक्षा में कम अंक आए तो” ऐसा सोचकर परीक्षा न दे तो कैसा रहेगा जबकि गीता कहती है कि तुम्हारा कार्य कर्म करना है फल तुम्हारे हाथ में नहीं है तुम्हारे लिए कर्म का फल कब, कितना और कैसे मिलेगा यह ईश्वर के हाथ में जीव केवल अपने कर्म पर ध्यान दे। मानव जब ऐसा सोचता है तो तनाव कर्म होता है, कर्म करने में आनन्द आता है, आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

“यादृशं कुरुते कर्म तादृशं फलमाप्नुयात्।
अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्॥”⁴

जीव जैसा कर्म करता है उसका फल उसी के अनुसार प्राप्त होता है अपने कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है चाहे कई जन्म क्यों न लेना पड़े।

“कर्मणा दैवनेत्रेण जन्मद्वेषोपपत्तये।

स्त्रिया: प्रविष्ट उदरं पुंसो रेतःकणाश्रयः ॥⁵

भगवान कपिल ने कहा— हे माता! जब जीव मनुष्य शरीर में जन्म लेना चाहता है तब उसके कर्मफल के अनुसार जीवात्मा पुरुष वीर्य के कण द्वारा स्त्री के गर्भ में प्रवेश करके एक विशेष शरीर धारण करता है।

किए गए कर्मों का फल अवश्य ही मिलता है किन्तु उन कर्मफलों के प्रति आसक्ति ही मोह और दुख दोनों का कारण बनती है कर्म अच्छा है किन्तु फलासक्ति प्रबल है तो भी दुख होता है आधुनिक जीवन में कर्म फल का बहुत बड़ा प्रभाव दिखाई देता है जल्दबाजी में ज्यादातर गलत निर्णय हो जाते हैं और उनका परिणाम बहुत भयंकर होता है और अत्यधिक तनाव में किए गए कर्म सदैव गलत परिणाम ही देते हैं हमारे महापुरुष और गीता कहती है कि अविचारित कर्म सदैव दुख का कारण बनते हैं —

“विना विचारे जो करे सो पाछे पछिताय।

काम विगारे आपनो जग में होयहसाय। ।

बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतहृष्टृते।”⁶

जिसने अपनी बुद्धि को भगवान् को समर्पित कर दिया है वह शुभ और अशुभ कर्मों का परित्याग करता अनासक्ति को प्राप्त हो जाता है

विचार पूर्वक किए गए कार्य सदैव स्थाई सुख प्रदान करते हैं किए गए अच्छे कर्म का परिणाम भले ही देर से मिले किन्तु वह मानसिक शान्ति और सुख में स्थायित्व प्रदान करता है जब हम कर्म फल के प्रति आसक्त होते हैं तो परिणाम देरी से मिलने पर हम बहुत दुर्वी हो जाते हैं जबकि कर्म का परिणाम ईश्वर पर छोड़ देते हैं तो हमारा मानसिक तनाव कम हो जाता है उससे होने वाले सुख दुख को हम ईश्वर की कृपा समझ कर स्वीकार कर लेते हैं। पितामह ब्रह्मा जी भगवान बालकृष्ण लाल की स्तुति करते हुए कहते हैं—

“तत्तेनुकम्पां सुसमीक्षमाणो, भुज्ञान एवात्मकृतं विपाकम्।

हृद्वाग्वपुर्भिर्विदधन्नमस्ते जीवेत यो मुक्तिपदे स दायभाक्। ।”⁷

हे प्रभो! जो जीव आपकी कृपा का अनुभव करता हुआ प्रारब्ध से जो कुछ भी सुख या दुःख प्राप्त होता है उसे निर्विकार मन से भोग लेता है और हृदय वाणी से अपने आपके चरणों में समर्पित कर देता है, वह जैसे पिता की संपत्ति पर पुत्र का अधिकार होता है वैसे ही वह आपके परम पद का अधिकारी हो जाता है।

भागवत का दर्शन एवं आधुनिक दृष्टिकोण

भागवत का दर्शन मुख्यतः चार प्रमुख स्तम्भों पर आधारित है सत्य भक्ति कर्म और जीव भागवत का प्रथम श्लोक है— ‘सत्यं परं धीमहि’॥⁸ इस आधुनिक युग में कलयुग के प्रभाव से प्रभावित जीव को आध्यात्मिक उत्तराति मानसिक शान्ति आदि उसे परम सत्य के बोध से ही प्राप्त हो सकती है।

भागवत में भक्ति अपने इष्ट के प्रति समर्पण भाव को कहा गया है यदि अनेक कर्म करने के बाद, अनेक धर्मानुष्ठानों के बाद भी ईश्वर में प्रेम उत्पन्न नहीं होता है तो यह केवल व्यर्थ परिश्रम ही है भागवत कहती है कि सब कुछ श्री कृष्ण को अर्पण करिए यानी हर कर्म को एक उच्च आदर्श व उद्देश्य से जोड़िये जिससे अपने कर्म के प्रति समर्पण भाव बना रहे और जीव का प्रत्येक कार्य समाज के लिए हो जब मनुष्य अपने सभी कर्म ईश्वर को समर्पित करता है तो मनुष्य के अन्दर कर्तापन का अहङ्कार नहीं होता है क्योंकि

यह अहङ्कार ही इस मनुष्य का सबसे बड़ा शत्रु है तथा किए गए कर्म की अनेक अशुद्धियां भी ईश्वर नष्ट कर देता है एक अन्य भाव से यह समझिए कि जैसे जल संशोधन यन्त्र से जल डालकर शुद्ध करते हैं उसी प्रकार जब जीव अपने सभी कर्म ईश्वर को समर्पित करता है तो वह कर्म फिल्टर होकर पुनः जीव को शुद्ध रूप में प्राप्त हो जाते हैं—

“गो गोचर जहँ लगि मन जाई। सो सब माया जानेहु भाई॥”⁹

जहां तक हमको दिखाई सुनाई पड़ रहा है व जितना हम सोच विचार कर सकते हैं सब कुछ माया है और माया क्षणभंगुर है जब मनुष्य भौतिक सुखों की दौड़ से थक जाता है तब भागवत यह स्मरण कराती है कि जीवन का उद्देश्य केवल अर्थोपार्जन ही नहीं बल्कि भगवत्यासि और आत्म कल्याण है—

“अस्थिस्तंभं स्नायुबद्धं मांसशोणितलेपितम्।

चर्मावनद्धं दुर्गंधं पात्रं मूत्रपुरीषयोः॥ 5.58॥

यत्प्रातः संस्कृतं चान्नं सायं तच्च विनश्यति।

तदीयरससंपुष्टे काये का नाम नित्यता॥ 5.61॥”

अस्थि स्नायु मांस चर्म से बनी यह देह मल मूत्र का पात्र है। बुढ़ापा, चिन्ता आदि अनेक विपत्तियों से ग्रसित रोग का घर है जो अनेक दोषों से परिपूर्ण और क्षणभन्नुर है इस मृत शरीर को पृथ्वी या जल में डाला जाएगा जो स्थलीय या जलीय जीवों की विषा बन जाएगा यदि अग्नि संस्कार किया जाएगा तो भस्म बन जाएगा, जो भोजन प्रातः बनाते हैं वह शाम तक दूषित हो जाता है और उसी अन्न के रस से पुष्ट यह शरीर नित्य कैसे हो सकता है। इससे जीव को यह शिक्षा मिलती है कि संसार के सुखों में आसक्त जीव जो सदैव छल, कपट में लिप्स है उसे जीवन की सच्चाई को समझा लेना चाहिए और निष्कपट, निस्वार्थ भाव से समाज के हित में कार्य करना चाहिए क्योंकि यह शरीर नश्वर है

मन की शान्ति भक्ति और समर्पण

श्रीमद्भागवत महापुराण में मानव जीवन के आध्यात्मिक उत्थान, मनोनिग्रह, ईश्वर भक्ति, और अपने इष्ट व कार्य के प्रति पूर्ण समर्पण आदि का बहुत ही अद्भुत उपदेश है। आधुनिक मानव का भटका हुआ मन ही उसकी अशान्ति का सबसे बड़ा कारण और दुख का जनक है यदि किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करनी है तो मन पर नियन्त्रण बहुत जरूरी मन का शांत होना ही वास्तविक शान्ति है मन बाहरी विषयों में भटकता है इच्छाएं उसे अस्थिर रखती हैं जब आपका मन अपने कार्य में लगने लगता है तो अपने आप शांत हो जाता है मन की शान्ति के लिए भगवान की भक्ति एक वैज्ञानिक पद्धति है।

लौकिक रूप से या आध्यात्मिक रूप से यदि हम कुछ प्राप्त करना चाहते हैं तो अपने कार्य अपनी भक्ति के प्रति समर्पण भाव बहुत जरूरी भगवत प्राप्ति के लिए कर्मकाण्ड या बाहरी साधनाएं ही पर्याप्त नहीं हैं उसके लिए पूर्ण समर्पण ही सर्वोत्तम साधन है जब हम पूर्ण समर्पित हो जाते हैं तब वहां हम अपना अस्तित्व खो देते हैं क्वार दास जी कहते हैं—

“प्रेम गली अति साकरी जा मे दो ना समाहि।

जब मैं था तब हरि नहीं अब हरि है मैं नहीं॥”¹⁰

भक्ति और समर्पण ही मानसिक शान्ति का सर्वोत्तम उपाय है और मन की शान्ति ही भक्ति है और भक्ति ही समर्पण है। भगवान के चरणों में अपने मन को लगाना ही शान्ति प्राप्त करने का सर्वोत्तम उपाय रोजमर्मा के तनाव, कामकाज, पढ़ाई-लिखाई, रिश्तों का तनाव सदैव मन को विचलित करता है यदि

मनुष्य प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर भगवन्नाम का जप और ध्यान करें तो मन एकाग्र हो जाएगा और एक नई ऊर्जा का सञ्चरण हो जाएगा जैसे मोबाइल की बैटरी को चार्ज करते हैं वैसे ही भक्ति के द्वारा मन को रि-चार्ज करते हैं।

निष्कर्ष

वास्तव में श्रीमद्भागवत महापुराण एक धार्मिक ग्रन्थ के साथ-साथ मानव जीवन का पथ प्रदर्शक भी है। आज के समय में आधुनिकता में खोया हुआ मनुष्य भौतिक सफलताओं की प्रतिस्पर्धा में अंतःकरण से रिक्त, चिन्ता ग्रस्त और जीवन असन्तुलित होता जा रहा है जीवन के इस अन्धेरे में श्रीमद्भागवत अपनी दिव्य कथाओं, भक्ति-ज्ञान-वैराग्य, कर्तव्य, धर्म, सम्बन्ध, मनोविज्ञान, नैतिकता आदि को उपदेश के माध्यम से सन्तुलित जीवन और अन्तःकरण की सुचिता तथा आन्तरिक द्वन्द्वों को शांत करके मानव का पथ प्रदर्शन कर रही है, बाहर सांसारिक वस्तुओं में सुख खोजता हुआ जीव यह भूल गया है कि वह स्वयं ईश्वर अंश है और सुख का भण्डार है रामचरितमानस में कहा गया है—

“ईश्वर अंश जीव अविनाशी।

चेतन अमल सहज सुख राशी॥”¹¹

सच्चा सुख तो सच्चिदानन्द की भक्ति में ही है, ईश्वर के प्रति समर्पण में अपनी कर्म निष्ठा ही हमें सुखी कर सकती हैं काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष जीव के बहुत बलवान शत्रु है जीव इन पर विजय प्राप्त करके परमपद का अधिकारी हो जाता है जीवन का अंतिम सत्य यही है कि जीव संसार से वैराग्य भगवान के भजन से आत्म कल्याण का उपाय करे।

Endnotes

1. श्रीमद्भागवत महापुराण महत्म्य खण्ड
2. श्रीमद्भागवत पुराण 1.1.1
3. गीता 16.21॥
4. देवीभागवत 6.9.67
5. भागवत 3.31.1 ॥
6. गीता 2.50
7. भागवत 10.14.8
8. भागवत 1.1.1
9. रामचरितमानस
10. संत कबीर दास
11. तुलसीदास जी के महाकाव्य रामचरितमानस के उत्तरकांड

Bibliography

- *Srimad Bhagavata Mahapurana*. Translated by Swami Tapasyananda, Sri Ramakrishna Math, 2003.
- *The Bhagavad Gita*. Translated by S. Radhakrishnan, HarperCollins Publishers, 2014.
- Tulsidas, Goswami. *Ramcharitmanas*. Gorakhpur: Gita Press, 2015.
- Das, Bhagavan. *The Essential Unity of All Religions*. Kessinger Publishing, 2005.

- Prabhupada, A. C. Bhaktivedanta Swami. *Srimad-Bhagavatam: With the Original Sanskrit Text, Its Roman Transliteration, Synonyms, Translation and Elaborate Purports*. Bhaktivedanta Book Trust, 1987.
 - Radhakrishnan, Sarvepalli. *Indian Philosophy*. Vol. 1, Oxford University Press, 2008.
 - Saraswati, Swami Akhandanand. *Bhagwat Darshan (Hindi Edition)*. Varanasi: Satsahitya Prakashan Trust, 2010.
 - Tagore, Rabindranath. *The Religion of Man*. Macmillan, 1931.
-